मोहे अंग लगा ले

“प्रेषिका : निशा भागवत रोमा शादी होने के बावजूद भी अकेली रहती थी। उसके पति कुवैत में सुनार का काम करते थे, पैसे की उसे कोई कमी नहीं थी। रोमा...

[Continue Reading] ...”

Story By: guruji (guruji)
Posted: Wednesday, September 17th, 2008
Categories: पड़ोसी
Online version: मोहे अंग लगा ले

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

मोहे अंग लगा ले

प्रेषिका : निशा भागवत

रोमा शादी होने के बावजूद भी अकेली रहती थी। उसके पति कुवैत में सुनार का काम करते थे, पैसे की उसे कोई कमी नहीं थी। रोमा और उसके सास-ससुर घर पूर्वी हिस्से में रहा करते थे। नीचे का अधिक हिस्सा उसी के पास था। उसके सास ससुर उसकी तरफ़ नहीं आते थे। वो सामने के कमरे में ही रहा करते थे। रोमा स्वयं भी अपने हिस्से को अलग रख कर उसे दरवाजे के द्वारा बन्द रखा करती थी। रोमा का समय अधिक समय चौक में ही काम करते बीतता था। वो अपने कमरे में फ़ुर्सत के समय अधिकतर लेटी लेटी अपने पति के साथ गुजारे चुदाई व रोमान्टिक पलो को याद किया करती थी।

रोमा को अपने पति के साथ बिताये हुये उत्तेजक पल सोचते हुये उसका मन अन्तर्वासना से भर उठता था। वो अपने कपड़े उतार कर फ़ेंक देती थी। अपने कामांगों को मसलते हुये बिन जल मछली की भांति तड़पने लगती थी। फिर वो अपनी दोनों टांगें फ़ैला कर बेशर्मी से अपनी योनि में अंगुली घुसाने लगती थी। पैन के पीछे का भाग अपनी गाण्ड के छेद में घुसा लेती थी। उसका मन काम वासना से फ़ट सा जाता था। अपने कोमल अंगों के साथ वो दुर्दांत व्यवहार करने लगती थी और इसका अन्त उसकी चूत में से पानी निकल कर होता था। रोमा अपने घर में ऊपर रहने वाले किरायेदार छात्र के नाम पर भी इस आग, अपना कामरस निकालती थी। वो भरकस प्रयत्न करती कि वो उसके प्रेमपाश में चला आये और ये सारा प्रेम रस उमेश पर न्यौछावर कर दे।

रोमा की छत इस प्रकार की थी कि उसका कमरा छत से जरा ऊंचा था और रोशनदान उसकी छत से ऊपर थे और छत पर खुलते थे। रात को बाहर अंधेरा होने के कारण उमेश को उन रोशनदान से झांकने में कोई परेशानी नहीं आती थी। सो उमेश भी उसे अधिकतर

मौका मिलते ही उसे चोरी छुपे ऊपर से झांक झांक कर देखा करता था। ऊपर से देखने के कारण उसे रोमा के स्तन का अधिक भाग उसे साफ़ दिखाई देता था। वो वासना से भर कर जब तड़पती थी तब उमेश अपने लण्ड को मुठ्ठी मार मार कर सारा रस वहीं छत पर निकाल देता था। जवान लड़का था, रोमा के स्तनों को निहारते हुए उसे बहुत उत्तेजना हो जाती थी। रोमा को यह सब पता था। जब वो पानी का काम करती थी तो उसे पानी में उमेश की परछाई नजर आ जाती थी। आज भी उमेश उसे छिप कर उसके स्तनों को निहार रहा था। रोमा ने जानबूझ कर अपने स्तन उसे दिखाने के लिये सामने का एक हुक खोल दिया करती थी।

फिर रोमा ने उसे झांकते हुये पकड़ लिया और अनजान बनते हुये कहा,"अरे उमेश, कैसे हो ?"

ऐसे अचानक पकड़ा जाने से वो बौखला उठा,"जी आण्टी, ठीक हूँ।"

"चाय पीनी हो तो आ जाओ नीचे, मैं बनाने जा रही हूँ।"

"जी ! आता हूँ। " वो इन्कार नहीं कर पाया और नीचे आ गया। उसकी सीढ़ियों का दरवाजा चौक में भी खुलता था। उनकी दोस्ती का यह पहला कदम था। रोमा ने धीरे धीरे उसे अपने जाल में फ़ंसाना आरम्भ कर दिया था। वहीं दूसरी ओर उमेश यह सोचता था कि रोमा को वो जल्दी ही चक्कर में ले लेगा। दोनों ही एक दूसरे पर डोरे डालने में लगे हुये थे, दोनों एक दूसरे की तड़प को जानने लगे थे। अब वो धीरे धीरे खुलने लगे। उमेश तो अब अधिक समय रोमा के पास बिताने लग गया था। दोनों खूब हंसते, बतियाते और फिर बस उनमे आग भरने लग जाती, फिर वे उसके आगे नहीं बढ़ पाते थे।

एक बार उमेश रोमा से खुलने के लिए तीन सीडी ले आया।

रोमा ने पूछा,”किस फ़िल्म की सीडी है ?”

तो उमेश ने कहा,”आण्टी यह तो मुझे पता नहीं है, मेरे दोस्त ने कहा था कि ये नई हैं, देख लेना।”

“चलो शाम को देखेंगे, पहले खाना बना लूँ और सास-ससुर को खिला दूँ फिर आराम से देखेंगे।”

उमेश तीनों सीडी वहीं रख कर ऊपर चला गया। रात को करीब नौ बजे रोमा ने उमेश को आवाज देकर नीचे बुला लिया और सी डी लगाने के लिये कहा।

उमेश ने एक सी डी लगाई। वो एक पुरानी फ़िल्म थी। रोमा ने कहा कि दूसरी लगा कर देखो। दूसरी वाली सीडी ब्ल्यू फ़िल्म थी। जैसे ही सी डी चालू हुई रोमा का मन खिल गया। जैसे ही उसमें सेक्सी सीन की शुरूआत हुई, उमेश उसे बन्द करने के लिये उठा।

“अरे यह क्या सी डी दे दी, वो साला … ”

“उमेश, अरे रुक तो जा, देखें तो ये क्या कर रहे हैं ?”

“आण्टी, नहीं ! यह तो ऐसी-वैसी फ़िल्म है।”

“चुप रह, देखने तो दे !” रोमा ने उमेश का हाथ पकड़ कर उसे बैठा लिया। उमेश मन ही मन अपनी सफ़लता पर खुश हो रहा था। हीरो लड़की के कपड़े उतारने में लगा था और लड़की अपने आप को शरमा कर बचाने की कोशिश कर रही थी। रोमा यह सब देख कर उत्तेजित होने लगी थी।

कुछ ही देर लड़के ने लड़की को अपने वश में कर लिया और उसे चोदने लगा।

“आण्टी, मुझे तो शरम आ रही है।”

“ओफ़्फ़ोह, चुप रह ना … देख तो कितना मजा आ रहा है।”

रोमा तो जानती ही थी कि उमेश उस पर मरता है तो फिर शर्म काहे की। रोमा चुदाई देख कर बेशर्म हो कर अपने स्तनों को धीरे धीरे दबाने लगी थी। इधर उमेश की हालत भी पतली होती जा रही थी। फ़िल्म समाप्त होते ही, उमेश सीधा ऊपर भागा। उसका तो वीर्य पजामे में ही निकल गया था। दूसरी ओर रोमा भी उत्तेजित हो कर झड़ चुकी थी। अब तो रोमा उससे रोज ही ब्ल्यू फ़िल्म लाने की फ़रमाईश करने लगी थी। रोमा इस काम के लिये उमेश को पैसे भी देने लगी थी। अब शाम को रोज ही दोनों हल्के कपड़े पहन कर फ़िल्म देखा करते थे। फ़िल्म देखते देखते तो उमेश का लण्ड सख्त हो कर पजामे में से उभर कर रोमा को ललचाने लगता था। फिर शायद वो उमेश को उसकी नासमझी पर गाली देने लगती थी। दोनों फ़िल्म का आनन्द लेते और अपने पजामे ही झड़ जाते थे। उनके पजामे अब रोज ही काम रस से नीचे से भीग जाते थे। दोनों एक दूसरे को देख कर मुस्करा भी देते थे। लेकिन अभी तक उन दोनों का चुदाई का काम आरम्भ नहीं हो पाया था।

आज उमेश जानकर रोमा के पास ही बैठ कर फ़िल्म देख रहा था। फ़िल्म में चुदाई के उत्तेजनापूर्ण सीन चल रहे थे। उमेश ने हिम्मत करके रोमा के गले में हाथ डाल दिया। रोमा ने उसे एक बार उमेश को अपनी बड़ी बड़ी आँखों से देखा, फिर वो फ़िल्म देखने लगी। उमेश ने रास्ता साफ़ जान कर अपना हाथ नीचे करते हुये उसके स्तनों की तरफ़ बढा दिया। रोमा को एक झुरझुरी सी हुई, शायद वो भी इसी की राह देख रही थी। फिर उसके हाथ स्तनों की ऊपर की गोलाईयों से छूने लगे, रोमा के बदन को गुदगुदाने लगे। रोमा ने तिरछी निगाहों से उमेश के पजामे की ओर देखा। वो हमेशा की तरह उफ़ान पर था। पजामे में से वो सीधा सख्त हो कर लकड़ी की तरह तना हुआ था।

अचानक उमेश ने अपना आपा खोते हुये रोमा के स्तनों को दबा डाला। रोमा के मुख से

एक तेज सिसकारी निकल पड़ी। रोमा का हाथ उमेश के लण्ड की तरफ़ बढ़ चला और उसके कड़क लण्ड को रोमा ने पकड़ कर जोर से दबा डाला। दोनों के मुख से मधुर सीत्कार निकल पड़ी। दोनों खुलने लगे थे। सीमायें अब टूटने लगी थी।

“मैं छोड़ूंगा नहीं अब तुझे !”

“मैं भी नहीं छोड़ने वाली तुझे, साले बहुत तड़पाया है तूने मुझे !”

“तड़पाया तो तूने है मुझे, साली आगे बढ़ती ही नहीं थी !”

“तो तू भी कहाँ बढ़ता था। बस फ़िल्म देख कर अपना माल पजामे में ही निकाल देता था।”

“आज तो तेरी चूत में माल निकालूंगा, तुझे चोद डालूंगा।”

“हाय रे मेरे उमेश, तो अब तक क्यो नहीं चोदा ?”

“अरे राण्ड तू कहती तो सही … चूत का भोसड़ा बना देता।”

“अरे तू, एक बार मेरे पर चढ़ तो जाता, मैं तो अपनी चूत उछल कर तेरे लौड़े को अपने में समा लेती, आप ही चुद लेती !”

दोनों वही सोफ़े पर जैसे कुश्ती लड़ने लगे। दोनों एक दूसरे के गुप्त अंगों को दबाते रहे, जोश में चूमा-चाटी करते रहे। जोश-जोश में उमेश ने अपना पजामा खोल कर लण्ड रोमा के मुख में घुसेड़ दिया और जोर जोर से धक्के मारने लगा। उसका दूसरा हाथ रोमा की चूत को दबा रहा था, मसल रहा था। उत्तेजना की अधिकतम सीमा दोनों ही पार कर चुके थे। तभी उमेश में अपना वीर्य रोमा के मुख में उगल दिया। वही दूसरी ओर रोमा की चूत भी पिघल कर पानी पानी हो गई थी। वो भी अत्यधिक उत्तेजना सहन नहीं कर पाई थी एव झड़ने लगी थी। दोनों अलग हो गये और एक दूसरे से नजर मिला कर देखने लगे।

“आण्टी, सॉरी, यह सब जाने कैसे हो गया, मुझे माफ़ करना ! मैं चलता हूँ।”

“अरे जो हो गया सो हो गया, चलो अब आगे फ़िल्म देखते हैं।” रोमा ने उसका हाथ थाम लिया।

“फिर आण्टी, मुझे कुछ कुछ होने लगता है।”

‘तो क्या हुआ, फिर तो चोद ही देना ना मुझे !”

उमेश रोमा के पास सरक आया,”आपसे कौन दूर रह सकता है आण्टी।”

“अच्छा तो मैं तेरे पर लण्ड पर बैठ जाती हूँ, बस ?”

जैसे ही रोमा खड़ी हुई, उमेश ने उसका हाथ पकड़ लिया, रोमा की कमर चिपकते हुये बोला,”हाय आण्टी मेरा लौड़ा … ?”

उसका लण्ड एक बार फिर से सख्त हो कर रोमा की गाण्ड में दबाव डालने लगा था।

“हाय रे, ऐसे धीरे से ना घुसा मेरी पिछाड़ी में, मेरी मार ही दे ना !”

उमेश ने अपने हाथ बढ़ा कर उसके अधखुले हुये ब्लाऊज में से उसकी चूचियाँ पकड़ ली।

“ओह, जरा जोर से दबा, उफ़्फ़फ़ मेरी जान ही निकाल देगा क्या ?”

“बस आण्टी, एक बार चुदा लो, मुझे सुकून मिल जायेगा।”

“मेरे राम जी, जाने कितने दिनो से मैं बिनचुदी बैठी हूँ, आज तेल लगा कर पेल दे।”

‘मेरी आण्टी, तेल कहाँ है ?”

“आजा, वो रहा, वहा बिस्तर पर चल, आराम से तेल लगा कर पेलना।”

रोमा ने अपनी क्रीम की डिबिया उमेश के हाथ में थमा दी। दोनों ही खुशी के मारे लिपट गये। दोनों के अधर मिल गये। रोमा के निचले होंठों को उमेश के होंठ कुचल रहे थे। दोनों के मुख थूक से लबरेज हो चुके थे। जीभ मुख गुहा में घुस कर आनन्द ले रही थी। दोनों कामाग्नि में जलते हुये एक दूसरे के शरीर में घुसे जा रहे है, जोर जोर से चूम रहे थे। रोमा अपने बिस्तर पर नीचे तकिया लगा कर उल्टी लेट गई। उसके गोल गोल नरम चूतड़ उभर आये। उमेश ने रोमा की गाण्ड थपथाई और उसे धीरे से दोनों हाथों से चीर दी। उसका अन्दर का भूरा भूरा छिद्र सामने आ गया। क्रीम को अंगुली में भर कर उसने धीरे धीरे छिद्र पर मलना आरम्भ कर दिया। रोमा गुदगुदी के मारे मचल उठी।

“अह्ह्ह, मजा आ गया, अब जरा अंगुली घुसा दे, उईईई … हां … हाय राम, कैसा आनन्द है।”

उमेश क्रीम से अंगुली भर भर उसकी गाण्ड में अंगुली घुसा घुसा कर क्रीम लगा रहा था। रोमा मस्ती में सिसकारियाँ भर रही थी थी, उसके आनन्द को देख कर वो भी खुश हो रहा था।

‘बस अब गाण्ड चोद दे राजा !”

“मजा आ रहा है ना ?”

“अरे लण्ड से ज्यादा मजा आयेगा, घुसेड़ तो सही !”

उमेश ने अपना कड़ा लण्ड उसकी गाण्ड के छिद्र पर रखा और अन्दर दबाया।

“अरे जोर लगा ना, चल दबा दे जोर से !”

रोमा ने अपनी गाण्ड का छेद ढीला कर दिया। छेद ढीला होते ही उसका सुपारा फ़क से अन्दर उतर गया।

“उईई माँ, यह हुई ना बात, अब पेल दे जानू !”

उमेश के लण्ड में भी जोर की कसावट से मीठा मीठा सा रस महसूस हुआ। वो रोमा की पीठ पर लेट गया और फिर अपनी गाण्ड को जोर से उसकी गाण्ड पर दबा दिया। लण्ड हौले हौले अन्दर सरकने लगा। रोमा खुशी के मारे किलकारियाँ मारने लगी। कुछ ही समय में उसका लण्ड पूरा अन्दर उतर चुका था। उमेश ने अपने हाथ उसकी सीने पर जमा लिये और बोबो को कस कर दबा लिया। फिर उसकी कमर ऊपर नीचे हो कर रोमा की गाण्ड को चोदने लगी। दोनों की मीठी मीठी आहें कमरे में गूंजने लगी।

“हाय कितने दिनों बाद चुदी है मेरी गाण्ड !”

रोमा नीचे दबी हुई अपनी मीठी आहों से उमेश के मन में मीठी तंरगों का संचार कर रही थी। रोमा का पूरा सहयोग पाकर उसमे जोश भर आया था। वो रोमा के तन को अच्छी प्रकार से भोगना चाहता था। रोमा भी उमेश के तन का मजा लेना चाहती थी। दोनों ही एक दूसरे के शरीर के भूखे थे। दोनों ही अपनी कामाग्नि बुझाना चाहते थे। रोमा की गाण्ड आराम से चुद रही थी। उसकी तंग गाण्ड के आनन्द से उमेश मस्त हुआ जा रहा था। अन्त में उसने अपना अन्तिम भरपूर शॉट लगा कर रोमा की गाण्ड में अपना वीर्यदान कर दिया।

रोमा इस अनोखे चिपचिपे, रसीले वीर्य को पाकर धन्य हो गई। उमेश का लण्ड ठण्डा होने पर अपने आप फ़िसलता हुआ बाहर निकल आया। रोमा ने सीधे हो कर प्रेम वश उमेश को अपनी छाती से लगा लिया और उसे खूब प्यार किया।

उमेश तो जवानी की बहार में बह निकला था। दो बार झड़ कर भी वो रोमा को भोगना

चाहता था। इसी लिपटा लिपटी में दोनों के दिलों में फिर से आग भर आई। रोमा तो गाण्ड मरवा कर और भी चुदासी हो गई थी। उसकी चूत तो गर्म हो कर जैसे तपने लगी थी। अभी तक उसकी चूत नहीं चुदी थी। रोमा ने जोश में भर कर उमेश को अपनी छांव में ले लिया। बादल बन कर वो उस पर छा गई। उमेश रोमा के तन के नीचे दबने लगा। रोमा अपनी टांगें समेट कर उसके लण्ड पर बैठ गई और हौले से उठ कर उसके तने हुये लण्ड पर अपनी चूत का छेद रख कर बैठ सी गई। पहले तो उसने अपनी चूत के पानी को अपने रूमाल से साफ़ किया और फिर उसके लण्ड को अपनी चूत में अन्दर सरकने का आनन्द लेने लगी।

उसकी चूत अन्दर से उत्तेजना से तंग हो गई थी। अन्दर से वासना की उत्तेजना से उसकी चूत की मांसपेशियाँ खिंच कर सख्त हो गई थी जिसे वो लण्ड को भीतर समाते हुये महसूस कर रही थी। रोमा की आँखें मस्ती में बन्द होने लगी थी।

कुछ ही देर में उमेश के सुपाड़े को भीतर बच्चेदानी के मुख पर टकराने का अहसास हुआ। एक मीठी सी गुदगुदी उसके तन में भर गई। रोमा ने अपनी चूत को अपनी बच्चेदानी पर हौले से रगड़ा। जैसे वो जन्नत में खोने लगी। उमेश के लण्ड का डण्डा उसके दाने पर रगड़ खाने लगा था। रोमा आनन्द के मारे बल खाकर उमेश से जोर से लिपट गई और उसके मुख से सिसकारियाँ फ़ूट पड़ी।

“जरा धक्का तो लगाओ राजा … आह मैं तो मरी जा रही हूँ।”

“आण्टी, तू नीचे आ जा, फिर तुझे दबा कर पेलूंगा !”

“ओह नहीं रे … बस चोद दे मुझे … मेरे जानू, नीचे से लगा रे धक्का !”

उमेश ने अपनी कमर नीचे से उछाली तो रोमा चहक उठी।

“आह् रे, मैं मर गई … मेरे राजा, और लगा ना !”

उमेश कोशिश करके कमर उछाल कर उसे चोदने लगा। पर जल्दी वो थकने लगा। उसने तब रोमा को दबा कर नीचे कर लिया। रोमा तड़प कर उसके नीचे आ गई और उमेश ने उसे अपने ताकतवर शरीर के नीचे दबा लिया। अब उमेश को रोमा को चोदने में कोई दिक्कत नहीं आ रही थी, वो जम कर धक्के मार रहा था।

“आह्ह आह्ह्ह … यह बात हुई ना। चोद दे यार, बहुत मजा आ रहा है।”

“ये ले … उफ़्फ़्फ़ … ये जोर से ले…” उमेश भी पूरी तन्मयता के साथ उसे चोद रहा था। रोमा आनन्द की सीमा को पार करने लगी। उसके चूचे उमेश दबा दबा कर मरोड़ रहा था,, मसल रहा था। इससे रोमा मदहोशी की चरमसीमा में पहुँचने लगी थी। तभी जैसे रोमा की आंखें उबल पड़ी। उसके जबड़े की हड्डियां तक उभर आई। दांत जैसे एक दूसरे पर किटकटाने लगे थे।

“उम … उमेश … हाय राम… मैं तो गई … हाय रे … आह उमेश … ” और एक चीख मार कर रोमा ने अपना कामरस छोड़ दिया। धीरे धीरे वो स्खलित होती जा रही थी। रोमा अब भी अपनी चूत में लण्ड ले रही थी। उमेश के तेज शॉट अभी भी चल रहे थे।

“बस … बस उमेश बस कर… लग रही है … बस कर !”

“ओह्ह, आण्टी मैं तो आया … आह्ह रे … मेरा तो निकला … रोमा आण्टी … तेरी तो … ओह्ह्ह ह्ह्ह ह्ह्ह !”

फिर उमेश जैसे उसके तन से चिपक गया। और उसकी चूत में अपना वीर्य छोड़ने लगा। रोमा उसके गर्म वीर्य का अपने शरीर में महसूस कर रही थी। उसे एक अपूर्व शान्ति मिल रही थी। दो जिस्म एक जान हो चुके थे। दोनों प्रेम से एक दूसरे को निहार रहे थे। अब

उन्होने अपने पैरों को फ़ैला लिया और उन्मुक्त भाव से खुल कर लेट गये। फिर वो आपस में प्यार से लिपट कर गहरी निंद्रा में खोने लगे। दोनों के मन आग शान्त हो गई थी। दोनों के दिलों को सुकून मिल गया था।

अब दोनों का प्यार परवान चढ़ने लगा। वो दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह पाते थे। दोनों एक दूसरे के शरीर को नोचते खसोटते, और फिर जानवरो की तरह चुदाई में लग जाते। बस मौका पाते ही रोमा अपनी चूत की प्यास बुझाने में लग जाती थी। उमेश पर तो जैसे पागलपन की सी दीवानगी चढ़ गई थी। उसका लण्ड तो कामाग्नि से जलता ही रहता था। लगता था जैसे वो दोनों एक दूसरे के लिये ही बने थे।

निशा भागवत